BA Part - III

History

By - Dr. Durga Bhawani

Scanned with CamScanner

B.A Part IIIrd History (Hons) VIIth Paper.

Date 11/5/20

प्रथम अफीम युद्ध के कारणों एवं परिणाम का वर्णन करें।

Q. Ans:- यूरोप के साथ चीन का सम्बन्ध अद्यतन ऐतिहासिक प्रामाणिकता के आधार पर ईस्वी सन के आरंभ से ही माना जाता है। चीन से रोम को चीनी रेशम का निर्यात होता था। यूरोप के बाजारों में छठी सदी तक चीनी रेशम की माँग बनी रही। चीनी रेशम के लिए चीन की निर्भरता उस समय समाप्त हुई, जब छठी सदी ईस्वी के लगभग यूरोपियनों ने चीन के रेशम के कीड़ों की चोरी कर ली।

1635 ई० के लगभग ईसाई धर्म प्रचारकों ने चीन में पहुँचकर ईसाई धर्म का प्रचार करना शुरू किया। स्मरण रहे कि 845 ई० में इस प्रकार के प्रचार पर प्रतिबंध लगाया गया था और इसी कारण से चीन एवं यूरोप का सम्पर्क 12वीं सदी तक टूटा रहा किन्तु 13वीं सदी में ईसाई धर्म प्रचारक पुनः चीन आने लगे।

1295 ई० में वेनिस यात्री मार्कोपोलो चीन आया। उसके वृतान्तों ने यूरोपवासियों को चीन की पूरी जानकारी दी। यूरोप के व्यापारियों के लिए चीन में व्यापार करना इतना आसान नहीं था, उन पर कठोर प्रतिबन्ध लगे हुए थे, परन्तु यूरोपीय व्यापारी चीन में व्यापार का परित्याग नहीं करना चाहते थे। वे तो चीन में 'अफीम का व्यापार' कर अधिक धन कमाना चाहते थे। इस अफीम के व्यापार में अंग्रेजों ने अन्य प्रतिद्वन्दियों को पीछे छोड़ दिया।

18वीं सदी के अन्त तक कैंटन व्यापार अधिकांशतः आँग्ल-व्यापार हो गया, जिस पर 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' का अधिकार था। कम्पनी द्वारा अफीम व्यापार को लेकर इंगलैंड व चीन के बीच दो युद्ध हुए, जिन्हें इतिहास में प्रथम एवं द्वितीय अफीम युद्ध के नाम से जाना जाता है।

प्रथम अफीम युद्ध के निम्न लिखित कारण थे—

1) कयोतो की प्रथा — चीन में विदेशियों को व्यापार करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता

Date / /
Page

था। विदेशी व्यापारियों को चीन में चीनी सम्राट के प्रति पूर्ण भक्ति भी प्रकट करनी पड़ती थी, उन्हें सम्राट के सामने उपस्थित होने पर नौ बार झुककर अभिवादन करना पड़ता था जो इन्हें नापसंद थी। क्योतो नामक यह प्रथा अंग्रेज दूतों एवं ईसाई धर्म प्रचारकों के लिए सम्मानजनक नहीं थी अतः वे इसका पालन करने में हिचकिचाते थे और क्योतो का पालन करने में उनके राष्ट्रीय सम्मान को ठेस पहुँचती थी। स्पष्ट है कि अंग्रेज इस प्रथा को समाप्त करना चाहते थे, जो कि चीन में तबतक संभव नहीं था जब तक कि ब्रिटिश जाति का चीनी शासन में प्रभुत्व स्थापित नहीं होता।

2) व्यापारिक विषमता — चीन साम्राज्य में शुरू में विदेशी व्यापार एक तरफा था, क्यों कि चीनीयों को यूरोपीय वस्तुओं की कोई आवश्यकता नहीं थी। चीन के साथ व्यापारिक संतुलन बनाए रखने के लिए यूरोपियनों के पास ऐसी कोई वस्तु नहीं थी, जिसे वे चीन को बेच कर व्यापारिक संतुलन कायम कर लें। यही कारण था कि चीन के सम्राट ने लॉर्ड मैकार्टेन से व्यापार के प्रति अपने रवैये के विषय में यह कहा था कि — "Our celestial Empire prosseses all things in prolific abundance and lacks no product within its own bordess. These was, therefore, no need to import the manufactures of outside barbarians in Exchange for own produce." कैंटन में व्यापारियों को व्यापार करने की अनुमति तो थी किन्तु पूरे साल वे वहाँ नहीं रह सकते थे ग्रीष्म ~~ऋतु~~ ऋतु में उन्हें मकाओ जाना पड़ता था। अतः विदेशी व्यापारी मकाओ में अपना परिवार रख कर कैंटन में व्यापार करने को विवश थे।

3) व्यापारिक संतुलन के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रयास — चीन के व्यापार में अपना सिक्का जमाने के लिए अंग्रेजों के लिए यह अतिआवश्यक था कि

वे चीन के व्यापारिक असन्तुलन को तोड़ें। अतः अंग्रेजों ने व्यापारियों से सम्पर्क बना कर चीन में अफीम के सेवन के प्रचार को बल देना शुरू किया। शुरू में तो उन्होंने तम्बाकू में अफीम मिला कर लोगों को मुफ्त में देना शुरू किया और जब चीनी अफीम के आदी होने लगे तो उन्होंने शुद्ध अफीम बेचना शुरू किया। चीनी लोग इस प्रकार अफीम के आदी हो गए कि अब विदेशी व्यापारियों की अवमानना आसानी से न कर पाए। चीनी सरकार ने इससे प्रभावित होकर 1820 ई० में कैंटन में अफीम का व्यापार बन्द करने के आदेश दिए, परन्तु इससे चीनी अधिकारियों को जो दस्तूरी (Squeeze) मिलती थी, की परवाह न करते हुए तिनटीन में अफीम से लदे जहाजों को उतारने की अनुमति दी। अधिकारियों को स्वविवेक के अधिकार प्राप्त होने से अफीम का आयात रोकना दुष्कर कार्य बन गया था। इधर चीनी व्यापारियों ने विदेशी व्यापारियों से अफीम चाँदी के सिक्कों का भुगतान कर के खरीदा। अतः स्वाभाविक रूप से चीनी प्रशासन को अफीम का व्यापार बन्द करने की ओर कदम उठाना अनिवार्य हो गया।

4) **आंग्ल - चीनी संबंध** — स्वतंत्र ब्रिटिश व्यापारी लम्बे समय से मांग कर रहे थे कि चीन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर स्वतंत्र ब्रिटिश व्यापारियों को भी व्यापार की अनुमति दी जाए, ब्रिटिश सरकार ने मानते हुए 1834 ई० में कैंटन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया। अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अतिरिक्त अन्य स्वतंत्र अंग्रेज व्यापारी भी वहाँ व्यापार कर सकते थे।

अब ब्रिटेन के प्रधानमंत्री पामर्स्टन ने लॉर्ड नेपियर को कैंटन का मुख्य अधीक्षक नियुक्त किया और नेपियर ने कैंटन के वायसराय से सम्पर्क बनाने का प्रयास किया किन्तु चीनी अधिकारी व्यापार को राजनीतिक रूप देने के पक्षपाती नहीं थे।

कैंटन के चीनी आयुक्त लिन-त्से-सू

ने विदेशी व्यापारियों को अफीम की पेटियां सौंप देने के लिए बाध्य किया। ब्रिटिश व्यापारियों को लगभग 20 हजार अफीम की पेटियां सौंपनी पड़ी जिसे समुद्र में फेंक दिया गया जिस की कीमत 60 लाख डॉलर थी। इतने बड़े धनराशि के नष्ट हो जाने से ब्रिटिश व्यापारी काफी दुखी थे। अतः उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर नष्ट हुई अफीम की क्षतिपूर्ति एवं चीन में व्यापारिक सुविधाएँ अर्जित करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया।

5) राज्य क्षेत्रातीत अधिकार — चीन में व्यापार करने वाले सभी विदेशी व्यापारियों पर चीन की परम्परा के अनुसार चीनी कानून लागू होते थे किन्तु अंगरेज व्यापारी इस नियम से सन्तुष्ट नहीं थे, क्यों कि इस नियम के अनुसार अंगरेज अभियुक्त का निर्णय चीनी अदालत में होता था और अंग्रेज व्यापारी चाहते थे कि अंग्रेज व्यापारी अभियुक्त का मामला उनके अपने देश के न्यायालय में हो इस प्रकार के राज्यक्षेत्रातीत की अधिकार की माँग कर रहे थे।

कॉस्टिन के शब्दों में — "The handing of Criminal cases by the Chinese authorities applying chinese law, had thus aroused considerable dissatisfaction among both the English and Americans."

वास्तव में न्यायिक मामलों की यह अप्रसन्नता इतनी अधिक थी कि इसी को लेकर युद्ध भी आरम्भ हुआ। 7 जुलाई 1839 ई० को नाविकों के आपसी झगड़े में एक चीनी नाविक की हत्या हो गयी। चीनी आयुक्त लिन ने अंग्रेज व्यापारिक अध्यक्ष इलियट से अभियुक्त को सौंपने की माँग की परन्तु इलियट ने अपराधी को सौंपने से साफ मना कर दिया।

अंगरेज व्यापारियों को मकाओ से निष्कासित कर दिया गया। इलियट ने पुरन्त कैंटन की नाकेबंदी कर दी और 1840 ई० में ब्रिटिश संसद में चीन के विरुद्ध

युद्ध के प्रस्ताव के पास होते ही कैंटन पर अधिकार कर लिया और यांगत्सी नदी की नाकेबंदी कर चीनी सेना पर आक्रमण कर दिया और सिक्यांग पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। अतः विवश होकर चीनीयों को संधि के लिए बाध्य होना पड़ा। इस संधि को इतिहास में नानकिंग की संधि के नाम से जाना जाता है। (1842)

परिणाम —

प्रथम अफीम युद्ध नानकिंग की संधि के साथ समाप्त हुआ परन्तु इसके अत्यन्त महत्वपूर्ण परिणाम निकले। यह संधि चीन के लिए कड़वा विष थी तो अंग्रेजों के लिए चीन में उनकी साम्राज्यवादी जीत की पहली किरण।

A] **ब्रिटेन को लाभ** — नानकिंग की संधि से ब्रिटेन को जो महत्वपूर्ण लाभ हुए थे, उनसे ब्रिटेन ने चीन में साम्राज्यवादी जीत का पहला झंडा गाड़ दिया था। सबसे उल्लेखनीय बात तो यह थी कि जिस अफीम व्यापार को लेकर युद्ध लड़ा गया था उसके विषय में नानकिंग की संधि में कुछ भी नहीं कहा गया। ब्रिटेन को क्षतिपूर्ति के रूप में 2 करोड़ 10 लाख डालर की धनराशि प्राप्त हुई। उसके चीन के पाँच बन्दरगाहों पर प्रभुत्व स्थापित हो गया और हाँगकाँग पर ब्रिटेन का अधिकार स्थापित हो गया। इसके तुरंत बाद 8 अक्टूबर 1843 के में इंग्लैंड ने चीन बाँग की संधि के तहत राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों की व्यवस्था भी कर ली।

B] **चीन में साम्राज्यवाद** — नानकिंग की संधि से प्रोत्साहित होकर अब फ्रांस, अमेरिका, बेल्जियम, प्रशा, हालैण्ड और पुर्तगाल आदि भी चीन में अपने प्रभाव में वृद्धि की ओर उन्मुख हुए। एक दशक के भीतर इन राष्ट्रों ने भी उन अधिकारों को प्राप्त कर लिया जिसे इंग्लैंड ने नानकिंग संधि से प्राप्त किया था। अमेरिका ने ह्वांगिया की संधि फ्रांस ने ह्वायमपोआ की संधि कर अपना प्रभुत्व चीन में स्थापित किया। इस प्रकार चीनी इतिहास में असमान संधियों का युग आरंभ हुआ और चीन का स्वर्णिम साम्राज्य विदेशी जातियों

का अड्डा बन गया तथा चीन का आर्थिक शोषण शुरू हुआ चीन की एकान्तता का अन्त हुआ और चीन का द्वार साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए खुल गया।

चीन एक अन्तर्राष्ट्रीय उपनिवेश बन गया।

———— x ————